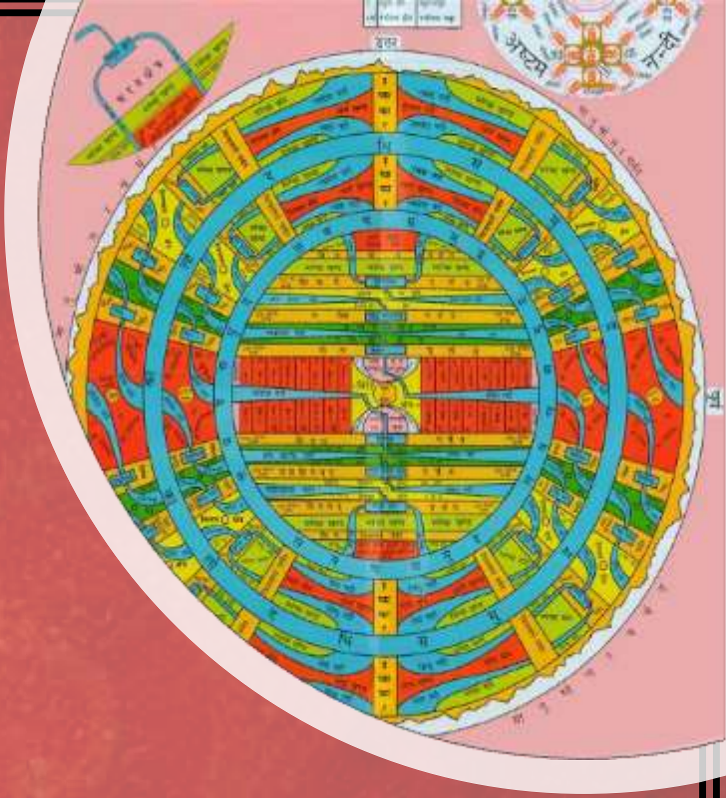

तत्त्वार्थ सूत्र

अध्याय 3 - मध्यलोक

Presentation Developed By: Smt Sarika Chabra

www.JainKosh.org

मध्यलोक

लम्बाई — •1 राजू

ऊचाई — •1 लाख चालीस योजन

चौड़ाई — •1 राजू

1 लाख चालीस योजन

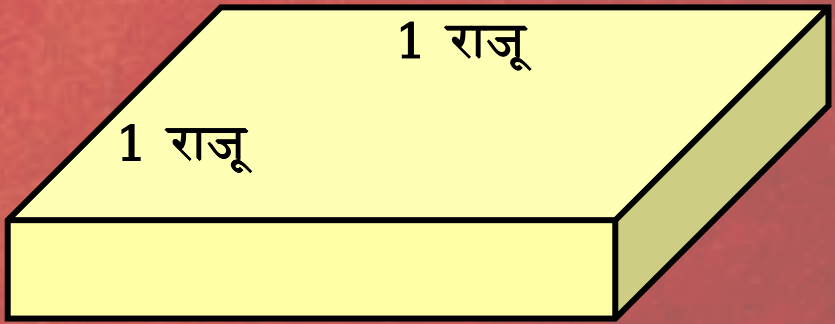

1 लाख चालीस योजन

www.JainKosh.org

निवास

- मनुष्य
- तिर्यंश्च
- देव
  - ज्योतिषी
  - व्यंतर
  - भवनवासी

जम्बूद्वीपलवणोदादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः ।।7।।

❖ सूत्रार्थ — जम्बूद्वीप आदि शुभ नाम वाले द्वीप और लवणोद आदि शुभ नाम वाले समुद्र हैं ।।7।।

द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्व पूर्व परिक्षेपिणो वलयाकृतयः ।।8।।

- सूत्रार्थ — वे सभी द्वीप और समुद्र दूने-दूने व्यास वाले पूर्व-पूर्व द्वीप और समुद्र को वेष्टित करने वाले और चूड़ी के आकार के हैं ।।8।।

www.JainKosh.org

कितने द्वीप समुद्र हैं ?

असंख्यात

2.5 उद्धार सागर के जितने समय हैं

25 कोड़ाकोड़ी पल्य के जितने समय हैं

कैसे हैं ?

एक दूसरे को घेरे हुए (गोल)

उत्तरोत्तर दूने-दूने व्यास वाले

शुभ नाम वाले

ainKo

अंतिम द्वीप और समुद्र

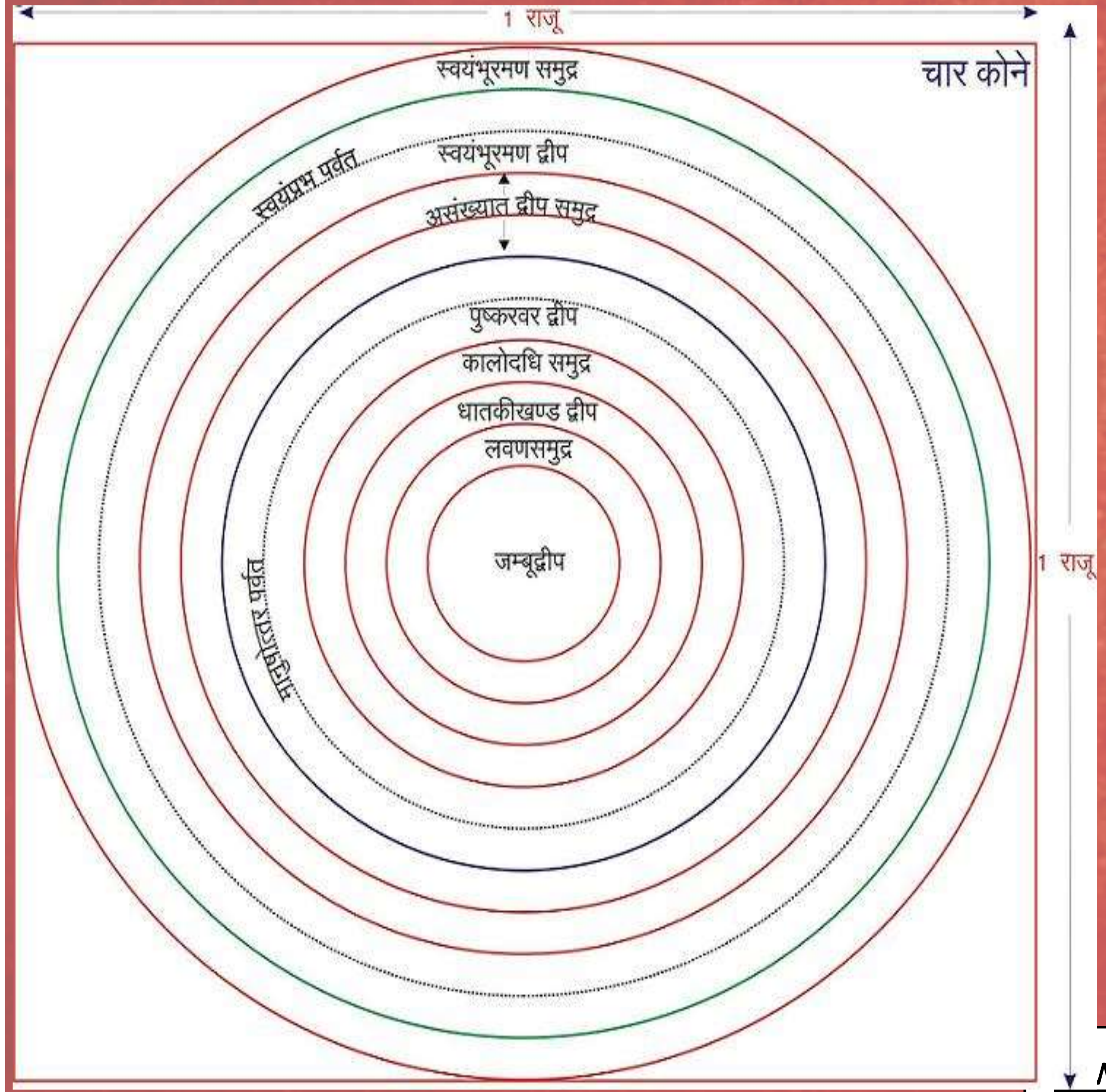

समुद्र	स्वाद
लवण समुद्र	खारा
वारूणीवर समुद्र	मदिरा के समान
क्षीरवर समुद्र	दूध के समान
घृतवर समुद्र	घी के समान
कालोधदि, पुष्करवर और स्वयंभूरमण समुद्र	जल के समान
शेष समुद्र	इक्षु रस के समान

www.JainKosh.org

तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजनशतसहस्त्रविष्कम्भो जम्बूद्वीपः ।।9।।

- सूत्रार्थ — उन सबके बीच में गोल और एक लाख योजन विष्कम्भ वाला जम्बूद्वीप है, जिसके मध्य में नाभि के समान मेरु पर्वत है।

जम्बूद्वीप

आकार	• सूर्य मण्डल के समान गोल
व्यास	• 1 लाख योजन (40 करोड़ मील)
मेरु	• सुदर्शन मेरु (नाभि सदृश)

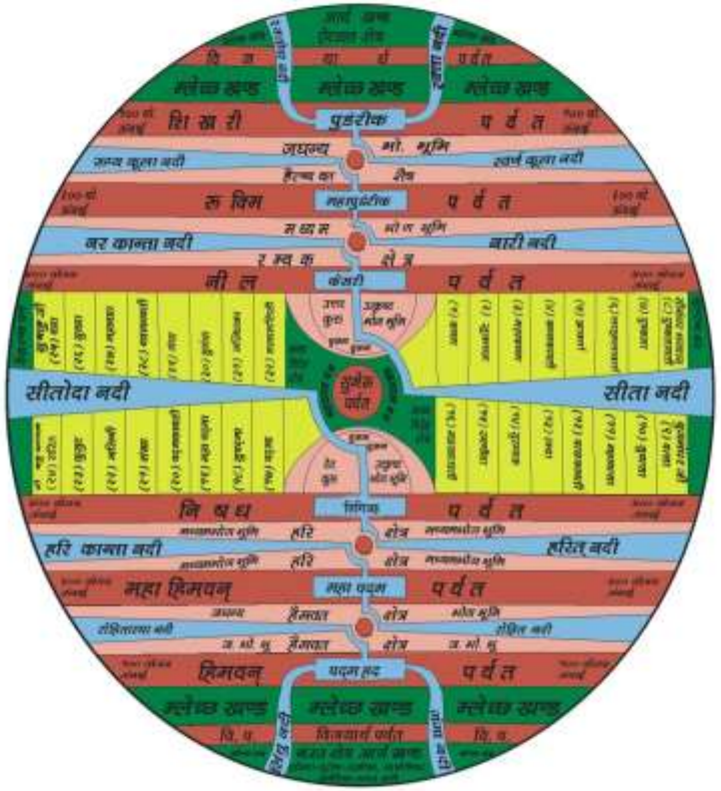

www.JainKosh.org

जम्बूद्वीप में क्या-क्या?

क्षेत्र	पर्वत	सरोवर	महा नदिया
7	6	6	14
भरत आदि	हिमवन आदि	पद्म आदि	गंगा आदि

www.JainKosh.org

सुदर्शन मेरू

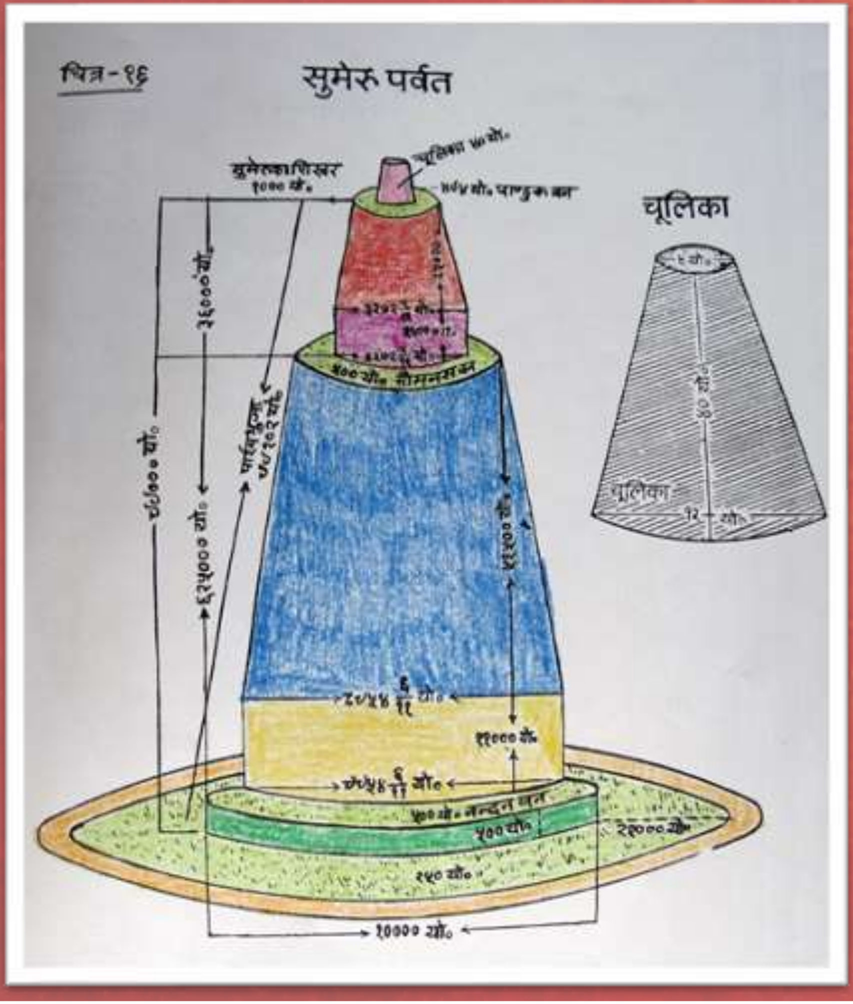

कुल ऊचाई

- 1 लाख योजन 40 योजन (40 करोड़ मील)

चूलिका

- 40 योजन (1 लाख 60 हजार मील)

जड़

- 1000 योजन (40 लाख मील)

मेरु ऊचाई

- 99,000 योजन

www.JainKosh.org

मेरु पर 4 वन

भद्रशाल वन	• चित्रा पृथ्वी पर
नन्दन वन	• चित्रा पृथ्वी से 500 योजन ऊपर
सौमनस वन	• नन्दन वन से 62500 योजन ऊपर
पाण्डुक वन	• सोमनस वन से 36000 योजन ऊपर

www.JainKosh.org

मेरु पर अकृत्रिम चैत्यालय

चारों वनों में हर एक दिशा में एक-एक अकृत्रिम चैत्यालय

- 4 × 4 = 16

पंच मेरु संबंधी अकृत्रिम चैत्यालय

- 16 × 5 = 80

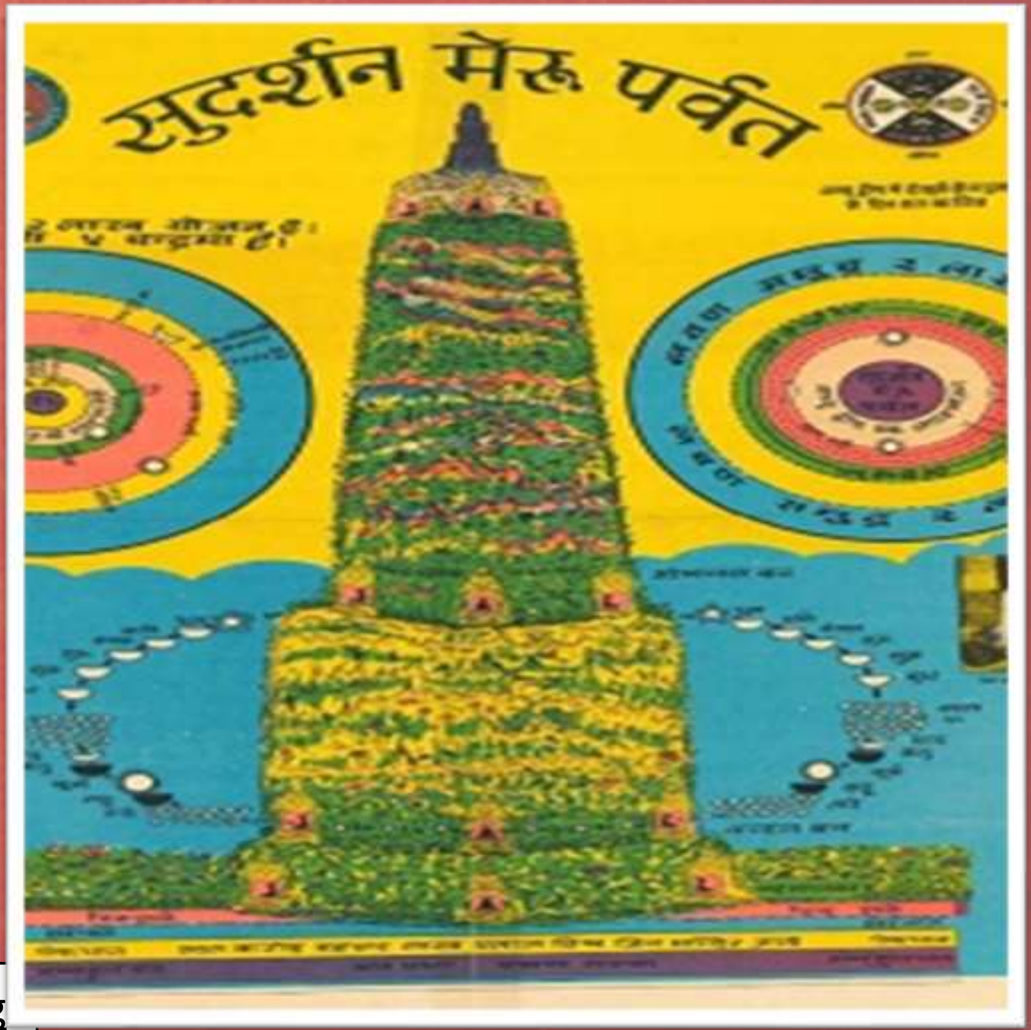

www.JainKosh.org

जम्बूवृक्ष

इसके नाम पर द्वीप का नाम जम्बूद्वीप पड़ा ।

उत्तरकुरू की पश्चिम दिशा में है ।

हरित मणिमय, स्थिर स्कन्ध वाला, पृथ्वीकायिक वृक्ष है ।

4 शाखायें है, जिसमें उत्तर दिशा की शाखा में जिनभवन है और बाकी 3 शाखाओं पर व्यन्तरदेवों के भवन हैं ।

जम्बूवृक्ष सहित उसके परिवार वृक्ष कुल 1,40,120 हैं ।

गजदन्त

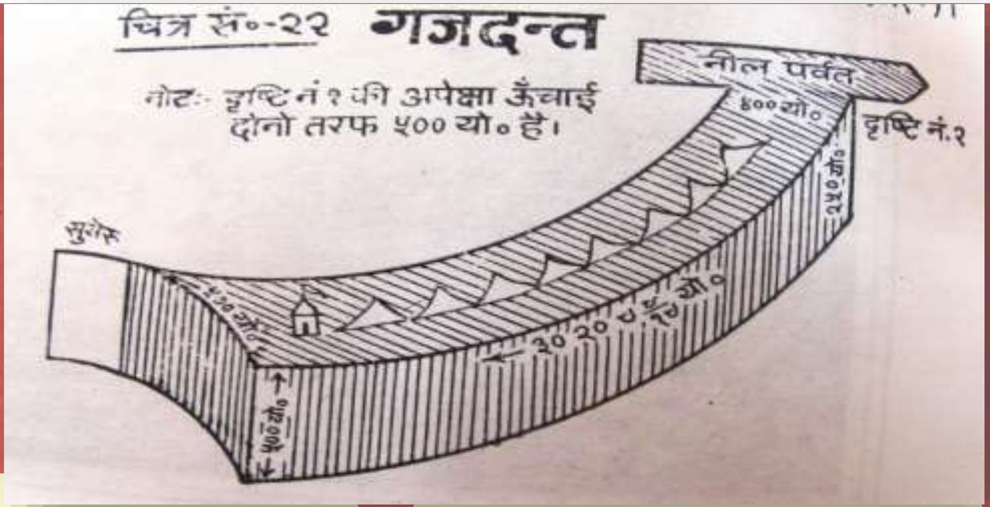

गन्धमादन	माल्यवान	सोमनस्य	विद्युतप्रभ
सुवर्णमय	वैडूर्यमणिमय	रजतमय	सुवर्णमय
पश्चिम-उत्तर में	पूर्वोत्तर में	पूर्व-दक्षिण में	दक्षिण-पश्चिम में

भरतहैमवतहरिविदेहरम्यकहैरण्यतैरावत वर्षाः क्षेत्राणि ।।10।।

❖ भरत, हैमवत, हरि, विदेह, रम्यक, हैरण्यवतवर्ष और ऐरावतवर्ष – ये सात क्षेत्र हैं ।।10।।

भरत वर्ष	हैमवत वर्ष	हरि वर्ष	विदेह वर्ष	रम्यक वर्ष	हैरण्यवत वर्ष	ऐरावत वर्ष
5 म्लेच्छ खण्ड			32 देश * 5 म्लेच्छ खण्ड * 1 आर्य खण्ड उत्कृष्ट भोगभूमि			5 म्लेच्छ खण्ड
1 आर्य खण्ड	जघन्य भोग भूमि	मध्यम भोग भूमि		मध्यम भोग भूमि	जघन्य भोग भूमि	1 आर्य खण्ड

तद्विभाजिनः पूर्वपरायता हिमवन्महाहिमवन्निषधनीलरुक्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वताः ।।11।।

❖ उन क्षेत्रों को विभाजित करने वाले और पूर्व-पश्चिम लम्बे ऐसे हिमवान, महाहिमवान, निषध, नील, रुक्मि और शिखरी ये छह वर्षधर पर्वत हैं ।।11।।

हेमार्जुन-तपनीयवैडूर्य-रजतहेममयाः ।।12।।

❖ ये छहों पर्वत क्रम से सोना, चादी, तपाया हुआ सोना, वैडूर्यमणि, चादी और सोना इनके समान रंग वाले हैं ।।12।।

मणिविचित्रपार्श्वा उपरिमूले च तुल्यविस्तारा: ।।13।।

- इनके पार्श्व मणियों से चित्र विचित्र हैं तथा वे ऊपर, मध्य और मूल में समान विस्तार वाले हैं ।।13।।

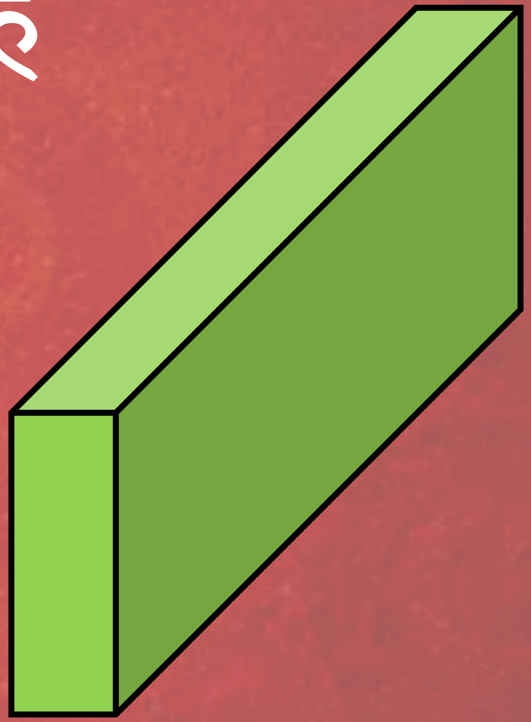

पर्वत	रंग	ऊचाई	सरोवर
हिमवान	सोना	100 योजन	पद्म
महाहिमवान	चादी	200 योजन	महापद्म
निषध	तपाया हुआ सोना	400 योजन	तिंगिच्छ
नील	वैडूर्य नील मणि	400 योजन	केसरी
रुक्मि	चादी	200 योजन	महापुण्डरीक
शिखरी	सोना	100 योजन	पुण्डरीक

भरत क्षेत्र

- इसमें 6 क्षेत्र/ खंड होते हैं
- विजयार्द्ध पर्वत के माध्यम से भरत क्षेत्र के 2 भाग हो जाते हैं
- फिर गंगा और सिन्धु नदियों के द्वारा उसके और भाग होकर 6 भाग बन जाते हैं
- नीचे का मध्य भाग आर्य खंड कहलाता है जिसमें हम रहते हैं और बाकी के 5 भाग म्लेच्छ खंड कहलाते हैं

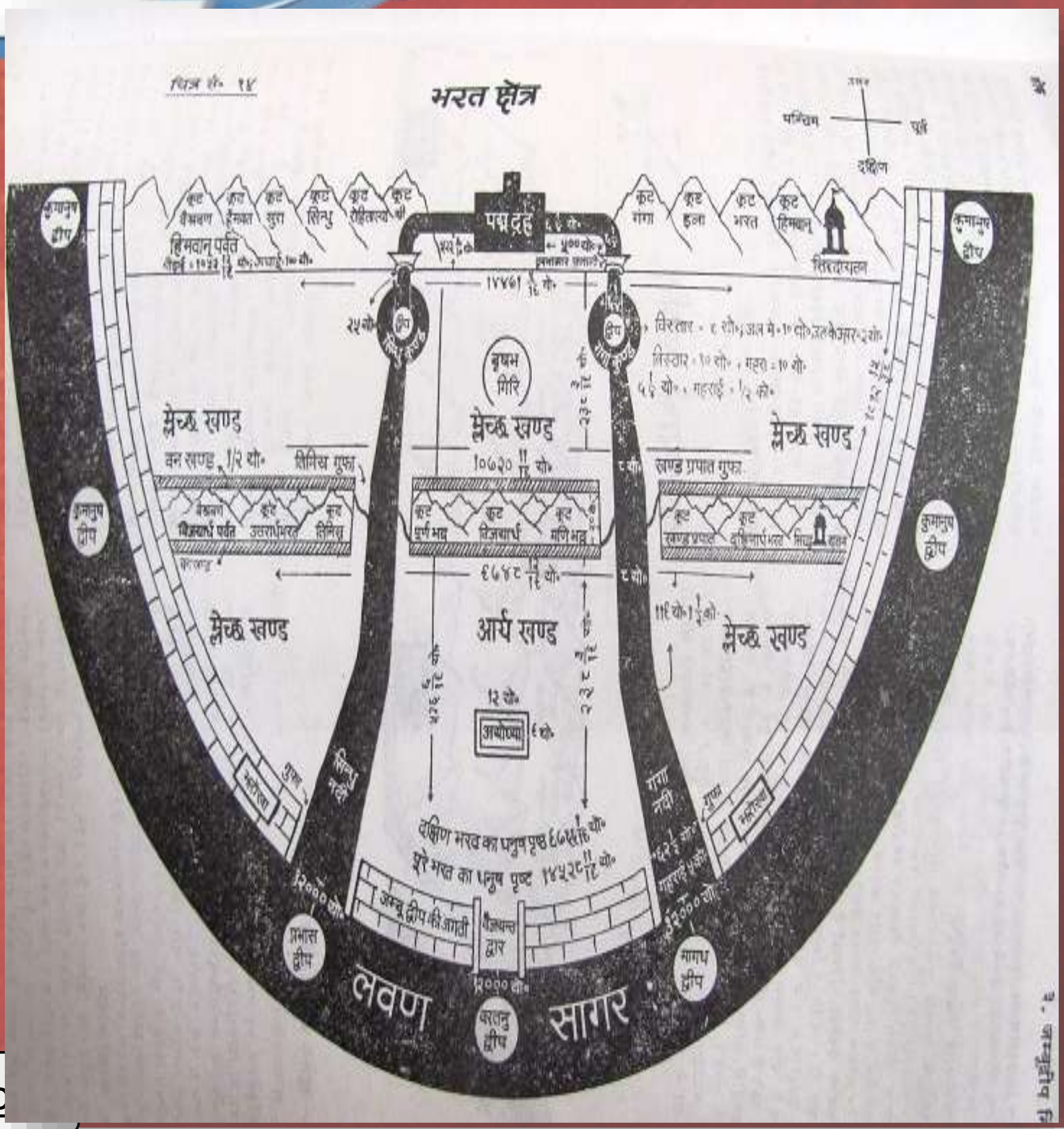

विजयार्द्ध पर्वत

- भरत क्षेत्र, ऐरावत क्षेत्र और विदेह क्षेत्र को 2 भागों में बांटने वाला पर्वत है ।
- इसमे 2 श्रेणियां होती हैं जिसमें पहली श्रेणी 10 योजन की ऊँचाई पर होती है जिसमे विद्याधर राजाओं की नगरियां होती हैं
- 10 योजन ऊपर दूसरी श्रेणी पर आभियोग्य जाति के देवों के भवन होते हैं

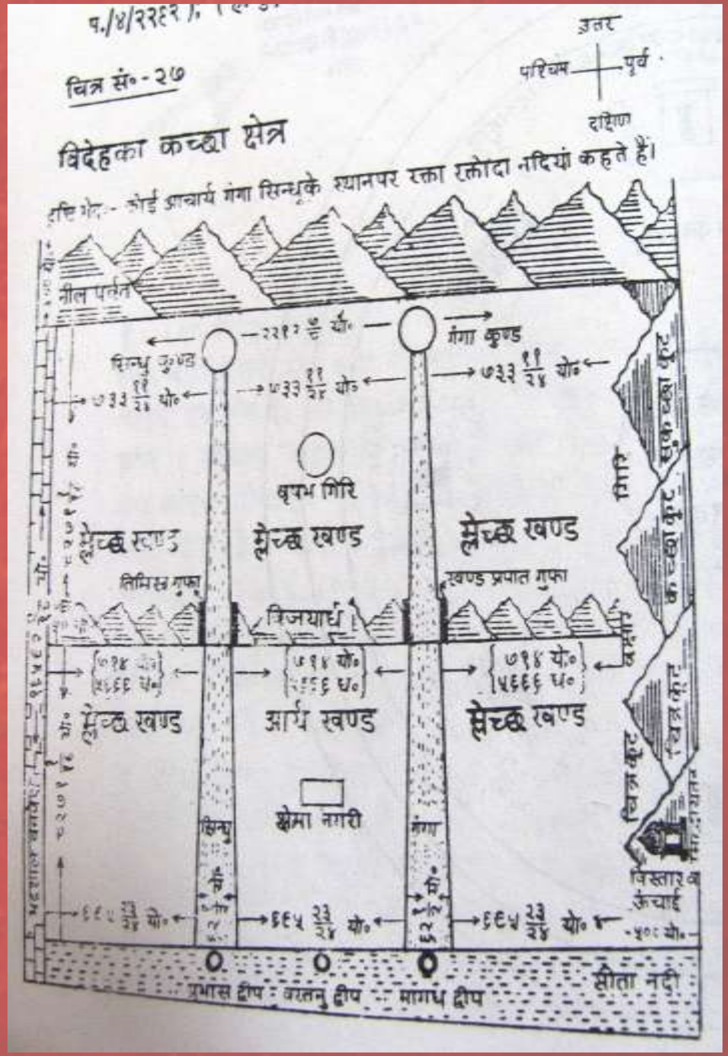

विजयार्द्ध पर्वत

उसके 5 योजन ऊपर की भूमि पर कूट होते है जिसमें पूर्व दिशा में एक अकृत्रिम चैत्यालय होता है

विजयार्द्ध पर्वत में दो गुफाये तिमिस्त्र और खंडप्रपात नाम की होती है, जिसमे से गंगा और सिन्धु नदी निकलकर बहती हैं

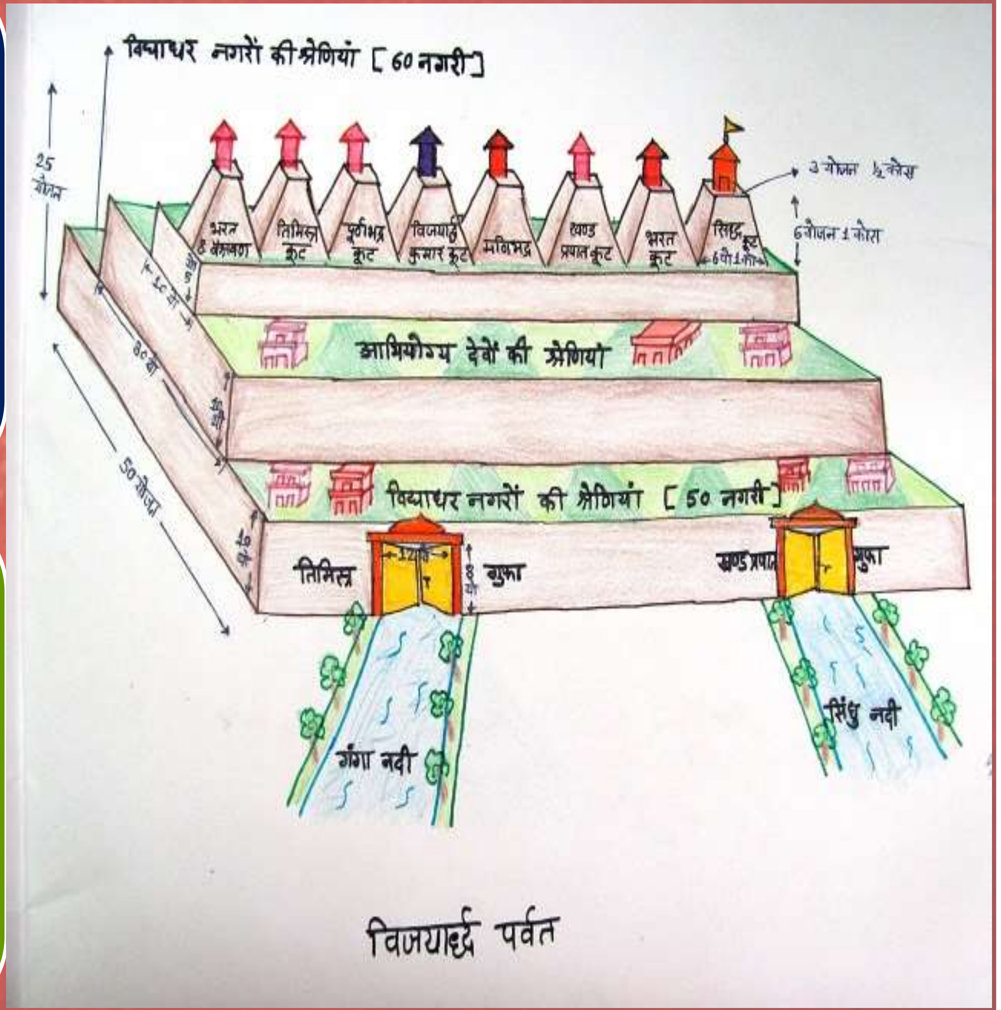

पद्ममहापद्म-तिगिञ्छकेशरि-महापुण्डरीकपुण्डरिका ह्रदास्तेषामुपरि ।।14।।

- इन पर्वतों के ऊपर क्रम से पद्म, महापद्म, तिगिंछ, केशरी, महापुण्डरीक और पुण्डरीक — ये तालाब हैं ।।14।।

www.JainKosh.org

प्रथमो योजनसहस्रायामस्तदर्धविष्कम्भोह्रदः ।।15।।

- पहला तालाब एक हजार योजन लम्बा और इससे आधा चौड़ा है ।।15।।

दशयोजनावगाहः ।।16।।

- तथा दस योजन गहरा है ।।16।।

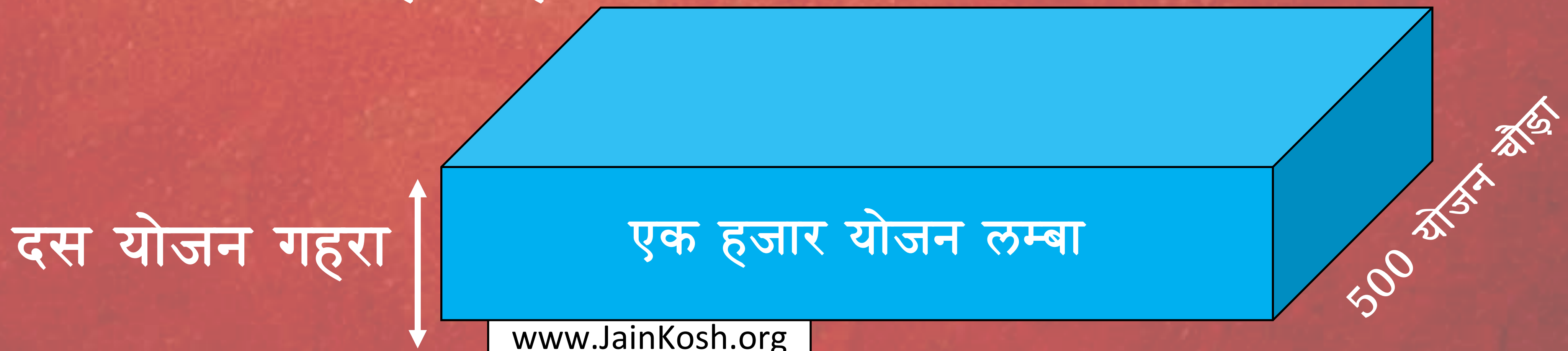

www.JainKosh.org

तन्मध्ये योजनं पुष्करम् ।।17।।

- ❖ इसके बीच में एक योजन का कमल है ।।17।।

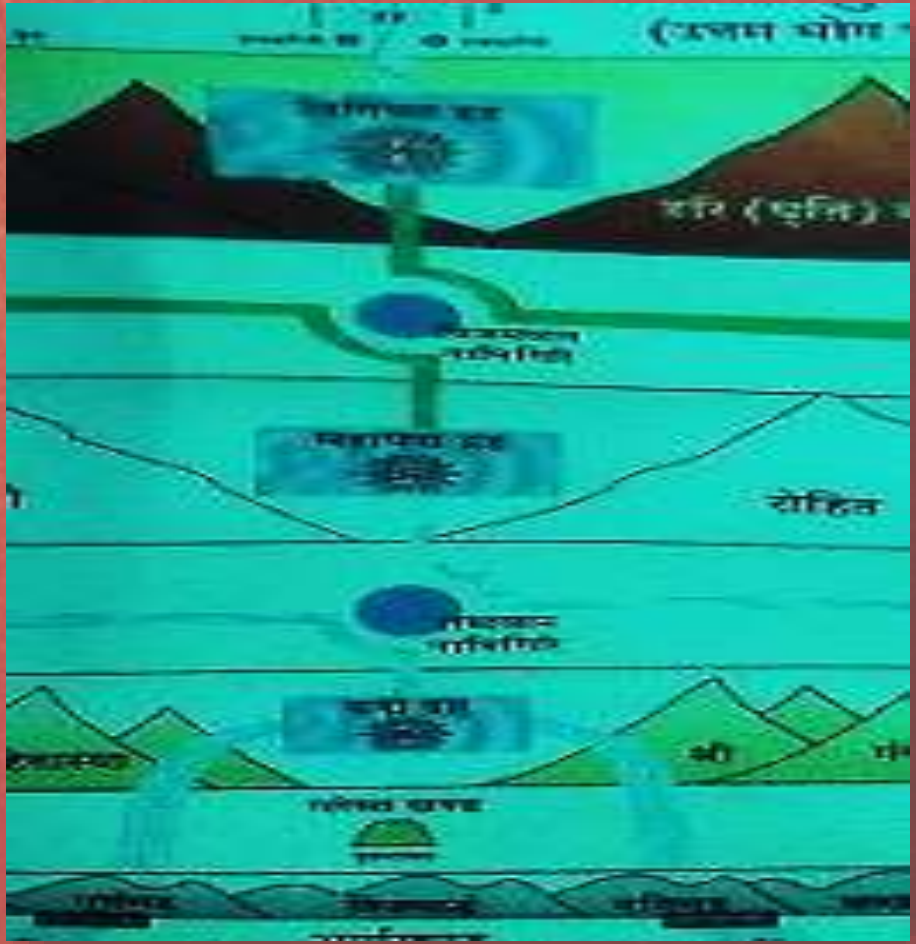

पद्म द्रह का कमल

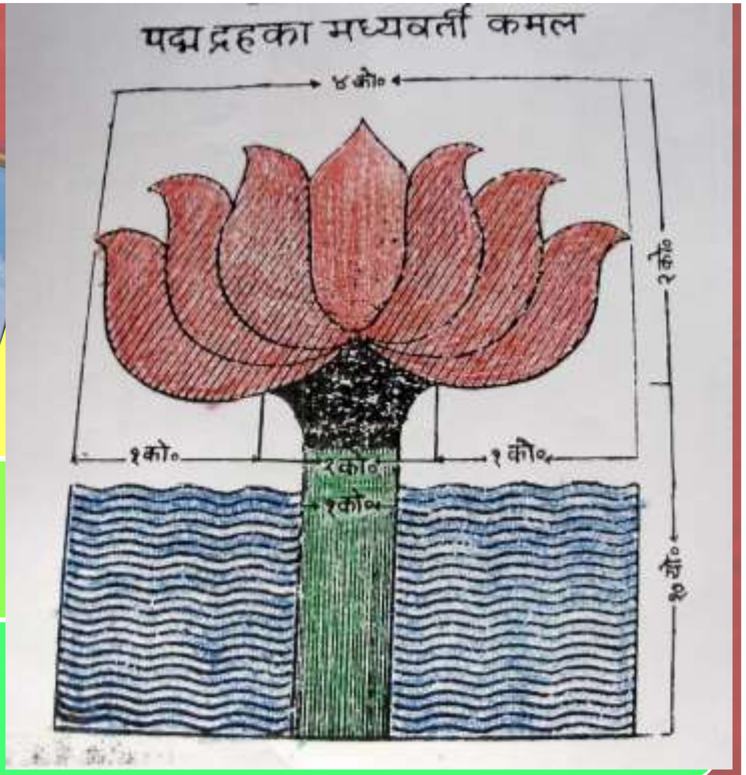

कमलाकार टापू है ।

कुल कमल 1,40,115 हैं ।

पृथ्वीकायिक है तथा मणियों से सजा हुआ है ।

मध्य कमल एक योजन बड़ा और बाकी के कमल आधे-आधे योजन हैं ।

मध्य कमल में देविया रहती हैं ।

बाकी के कमलों में अंगरक्षक, सेना, अनीक आदि देव रहते हैं ।

जितने कमल हैं उतने ही जिनालय हैं ।

तद्द्विगुणद्विगुणा ह्रदाः पुष्कराणि च ।।18।।

❖ आगे के तालाब और कमल दूने-दूने हैं ।।18।।

तन्निवासिन्यो देव्यः श्रीह्रीधृतिकीर्तिबुद्धिलक्ष्म्यः पल्योपमस्थितयः ससामानिकपरिषत्काः ।।19।।

❖ इनमें श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी ये देविया सामानिक और परिषद देवों के साथ निवास करती हैं तथा इनकी आयु एक पल्योपम है ।।19।।

www.JainKosh.org

कमल की देवियाँ

श्री, ह्री, धृति देवी सौधर्म की देविया हैं ।

और कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी ईशानेन्द्र की देविया हैं ।

इनकी आयु एक पल्योपम होती है ।

सभी ब्रह्मचारिणी होती हैं ।

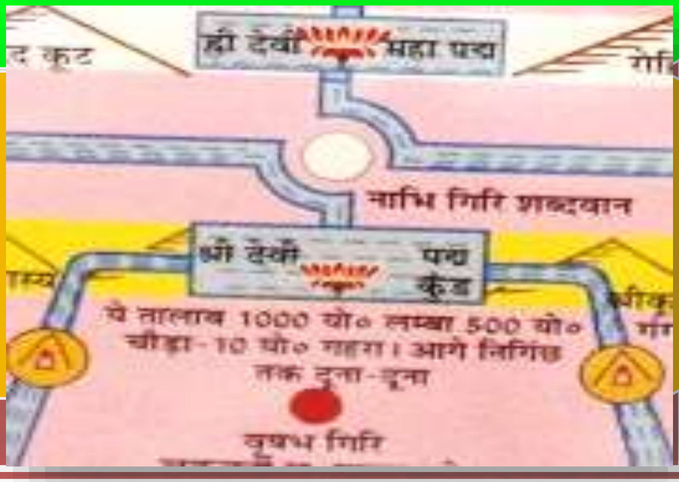

www.JainKosh.org

क्र.	नाम	लम्बाई (योजन में)	चौड़ाई (योजन में)	गहराई (योजन में)	कमल व्यास (योजन में)	देवी निवास
1	पद्म	1,000 (40 लाख मील)	500 (20 लाख मील)	10 (40,000 मील)	1 (4,000 मील)	श्री
2	महापद्म	2,000	1,000	20	2	ह्री
3	तिगिञ्छ	4,000	2,000	40	4	धृति
4	केशरी	4,000	2,000	40	4	कीर्ति
5	महा पुण्डरीक	2,000	1,000	20	2	बुद्धि
6	पुण्डरीक	1,000	500	10	1	लक्ष्मी

गङ्गासिन्धुरोहिद्रोहितास्या-हरिद्धिरकान्तासीतासीतोदानारीनरकान्ता-सुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदाः सरितस्तन्मध्यगाः ।।20।।

- इन भरत आदि क्षेत्रों में गंगा, सिन्धु, रोहित, रोहितास्या, हरित, हरिकान्ता, सीता, सीतोदा, नारी, नरकान्ता, सूवर्णकूला, रूप्यकूला, रक्ता और रक्तोदा नदिया बहती हैं ।।20।।

द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः ।।21।।

- दो-दो नदियों में से पहली-पहली पूर्व समुद्र को जाती है ।।21।।

शेषास्त्वपरगाः ।।22।।

- किन्तु शेष नदिया पश्चिम समुद्र को जाती हैं ।।22।।

चतुर्दशनदीसहस्रपरिवृता गङ्गासिन्ध्वादयो नद्यः ।।23।।

- गंगा और सिन्धु आदि नदियों की चौदह-चौदह हजार परिवार नदिया हैं ।।23।।

www.JainKosh.org

विदेह क्षेत्र

विदेह क्षेत्र में कुल 32 नगरियाँ होती हैं ।

मेरु की पूर्व दिशा में 16 तथा पश्चिम दिशा में भी 16 नगरियाँ होती हैं ।

उस एक दिशा में भी नदी के दोनों और 8 – 8 इस प्रकार से 16 होती हैं ।

उस एक भाग में 3 विभंगा नदी और 4 वक्षार पर्वतों के माध्यम से विदेह क्षेत्र में 8 नगरियाँ बन जाती है ।

प्रत्येक वक्षार पर्वत के नदी की ओर वाले भाग पर एक एक अकृत्रिम जिन मंदिर होता है ।

ऐसे 32 नगरी से सम्बंधित कुल 16 वक्षार के 16 जिनालय होते हैं

विदेह क्षेत्र

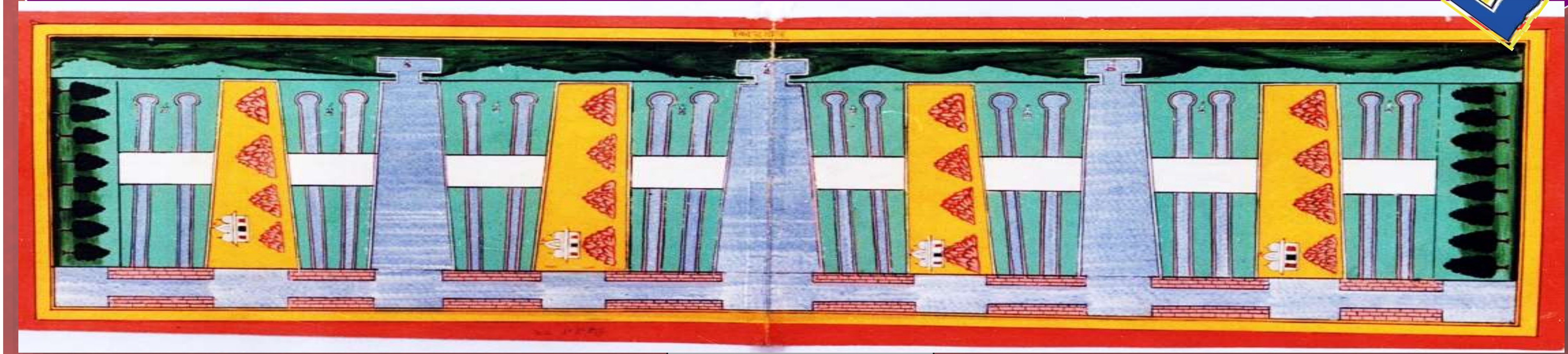

ढाई द्वीप कैसे?

- ❖ जम्बूद्वीप + धातकीखंड द्वीप + पुष्करवर आधा = ढाई द्वीप
- ❖ जम्बूद्वीप (1 लाख यो) +
- ❖ लवण समुद्र (2 + 2 ला यो) +
- ❖ धातकीखंड द्वीप (4 +4 ला यो) +
- ❖ कालोदधि समुद्र (8 + 8 ला यो)+
- ❖ पुष्करवर आधा (8 + 8 ला यो)
- ❖ = 45 लाख योजन

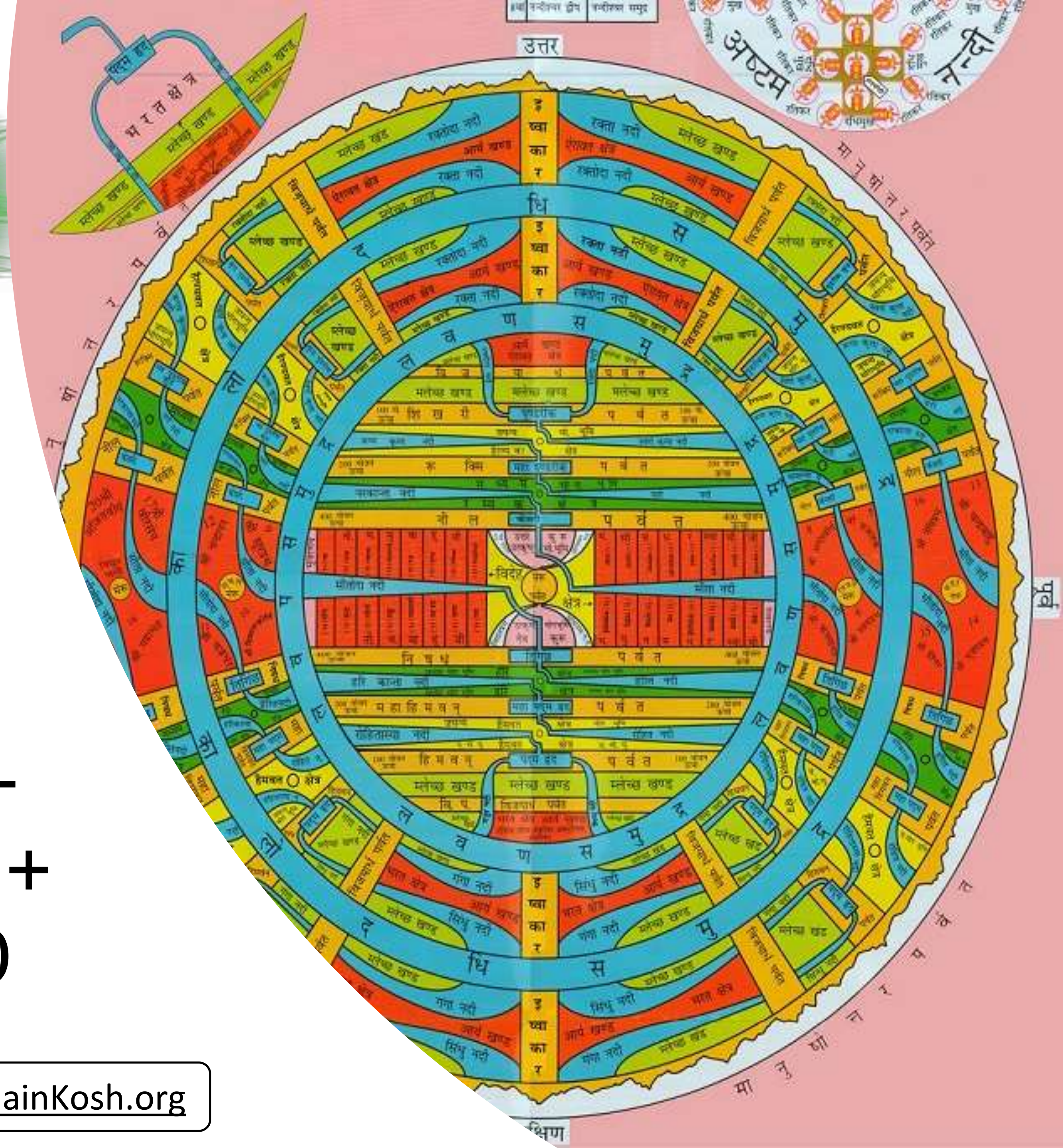

www.JainKosh.org

नदियाँ

पर्वत के सरोवरों से तोरण द्वारों से निकल कर गोमुख से नीचे गिरती हैं

जहां नीचे गिरती हैं वहां कुण्ड है, उस कुण्ड के बीच में पर्वत है ।

पर्वत के ऊपर देवी का महल है

महल के शिखर पर कमलासन सिंहासन पर भगवान की प्रतिमा है

फिर विजयार्ध की गुफा से निकलकर समुद्र में मिल जाती है

विशेष

जो परिवार नदियाँ हैं वे म्लेच्छ खण्ड में बहती हैं, इनकी संख्या में परिवर्तन नहीं आता है।

आर्य खंड में बहने वाली नदियों की यहाँ गिनती नहीं बताई है क्योंकि यहाँ प्रलय आता है।

परिवार नदियाँ

सरोवर (जिससे नदियाँ निकली हैं) नाम	नदियों के नाम	बहने का क्षेत्र	किस दिशा में जाती हैं	परिवार नदियाँ
पद्म	सिंधु	भरत	दो-दो नदियों	14,000
	गंगा	,,	के युगलों में	,,
	रोहितास्या	हैमवत	से पहली-	28,000
महापद्म	रोहित	,,	पहली नदी	,,
	हरिकान्ता	हरि	(जैसे - गंगा)	56,000
तिगिञ्छ	हरित्	,,	पूर्व समुद्र में	,,
	सीतोदा	विदेह	एवं बाद-बाद	1,12,000
केशरी	सीता	,,	की नदी	,,
	नरकान्ता	रम्यक	(जैसे - सिंधु)	56,000
महा पुण्डरीक	नारी	,,	पश्चिम समुद्र	,,
	रूप्यकूला	हैरण्यवत	में मिलती है।	28,000
पुण्डरीक	सुवर्णकूला	,,		,,
	रक्तोदा	ऐरावत		14,000
	रक्ता	,,		,,

भरतः षड्विंशतिपञ्चयोजनशतविस्तारः षट्चैकोनविंशतिभागा योजनस्य ।।24।।

❖ भरत क्षेत्र का विस्तार पाच सौ छब्बीस सही छह बटे उन्नीस ($526\frac{6}{19}$) योजन है ।।24।।

तद्द्विगुणद्विगुणविस्तारा वर्षधरवर्षा विदेहान्ताः ।।25।।

❖ विदेह पर्यन्त पर्वत और क्षेत्रों का विस्तार भरत क्षेत्र के विस्तार से दूना-दूना है ।।25।।

www.JainKosh.org

विदेह क्षेत्र

जम्बूद्वीप में मध्य का क्षेत्र विदेह क्षेत्र कहलाता है ।

उस विदेह के सुमेरु पर्वत के द्वारा 2 भाग हो जाते हैं – पूर्व विदेह पश्चिम विदेह ।

पूर्व विदेह में बहने वाली सितोदा नदी और पश्चिम विदेह में बहने वाली सीता नदी दोनों के फिर से दो दो उत्तर और दक्षिण दो भाग कर देती है

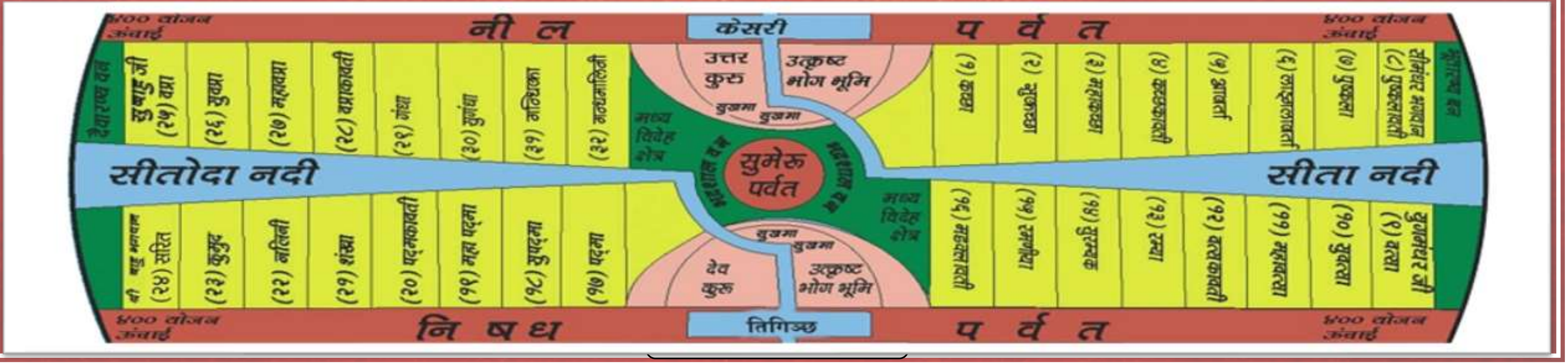

20 विद्यमान तीर्थंकर

एक दिशा की 8 नगरियों के मध्य में कम से कम एक तीर्थंकर तो नियम से हमेशा विद्यमान रहते ही हैं ।

इस प्रकार 32 नगरियों में 4 तीर्थंकर कम से कम होंगे ही होंगे

1 मेरु सम्बंधित विदेह में 4 तीर्थंकर तो 5 मेरु सम्बंधित नगरियों में कम से कम 20 तीर्थंकर होते हैं।

अधिकतम 160 तीर्थंकर एक साथ विदेह क्षेत्र में हो सकते हैं ।

170 तीर्थंकरों की गणना

भरत क्षेत्र	5
ऐरावत क्षेत्र	5
विदेह क्षेत्र	5 विदेह में 32 नगरी 32 × 5 = 160
कुल	170

www.JainKosh.org

उत्तरा दक्षिणतुल्याः ।।26।।

❖ उत्तर के क्षेत्र और पर्वतों का विस्तार दक्षिण के क्षेत्र और पर्वतों के समान हैं ।।26।।

भरतस्य विषकम्भो जम्बूद्वीपस्य नवतिशतभागः ।।32।।

❖ भरत क्षेत्र का विस्तार जम्बूद्वीप के एक सौ नब्बेवा भाग हैं ।।32।।

	विस्तार	ईकाई के विस्तार	कौन से वा भाग
भरत	526 6/19	1	1/190
हिमवान	1052 12/19	2	2/190
हैमवत	2105 5/19	4	4/190
महाहिमवान	4210 10/19	8	8/190
हरि	8421 1/19	16	16/190
निषध	16842 2/19	32	32/190
विदेह	33684 4/19	64	64/190
नील	16842 2/19	32	32/190
रम्यक	8421 1/19	16	16/190
रुक्मि	4210 10/19	8	8/190
हैरण्यवतवर्ष	2105 5/19	4	4/190
शिखरी	1052 12/19	2	2/190
ऐरावतवर्ष	526 6/19	1	1/190
Total		190	

www.JainKosh.org

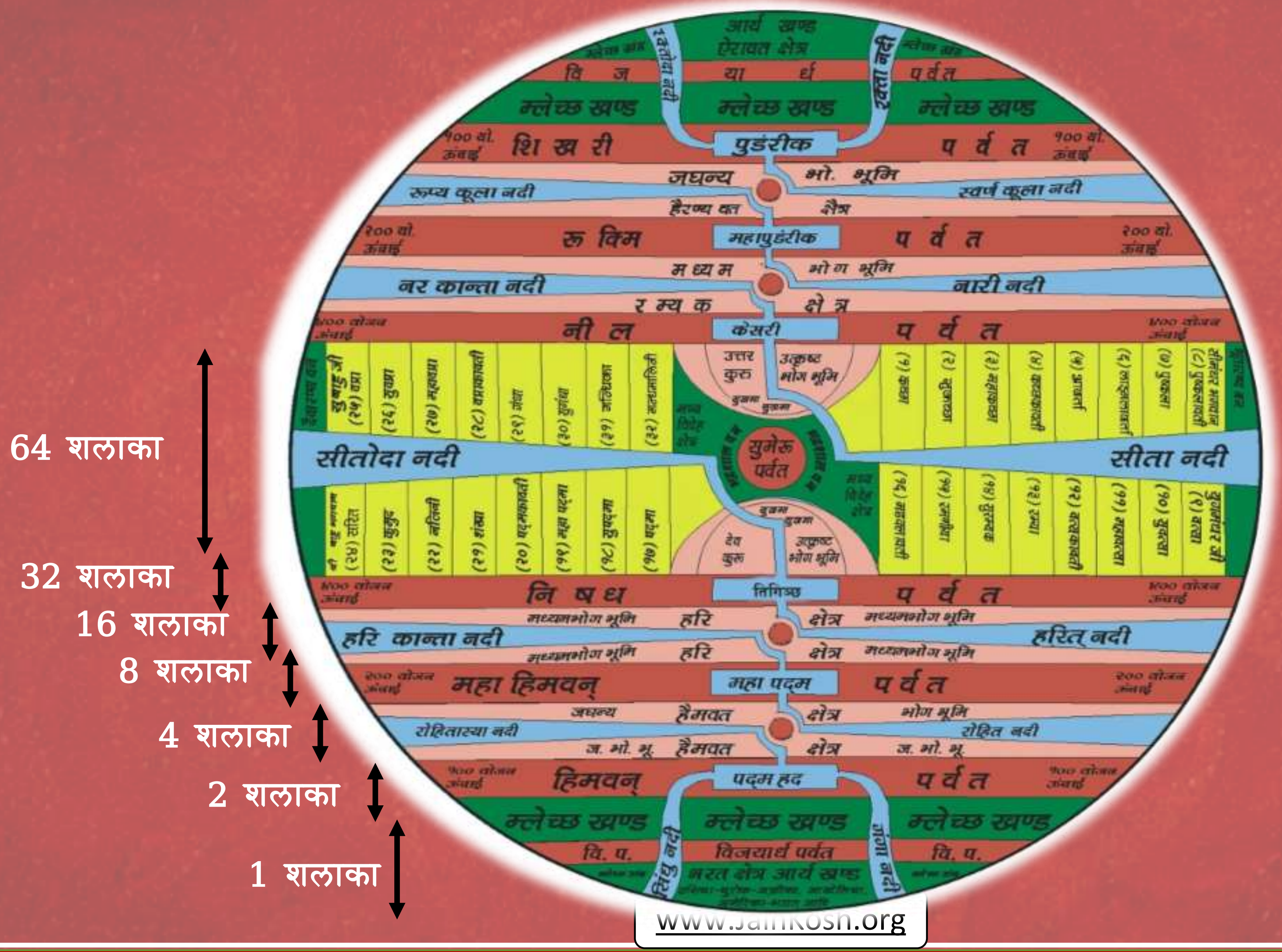
64 शलाका
32 शलाका
16 शलाका
8 शलाका
4 शलाका
2 शलाका
1 शलाका
आर्य खण्ड
ऐरावत क्षेत्र
रक्ता नदी
रक्तोदा नदी
वि ज या र्ध प र्व त
म्लेच्छ खण्ड
म्लेच्छ खण्ड
म्लेच्छ खण्ड
शि ख री
पुंडरीक
प र्व त
जघन्य
भो. भूमि
रूप्य कूला नदी
स्वर्ण कूला नदी
हैरण्य वत
क्षेत्र
रु क्मि
महापुंडरीक
प र्व त
म ध्य म
भो ग भूमि
नर कान्ता नदी
नारी नदी
र म्य क
क्षे त्र
नी ल
केसरी
प र्व त
उत्तर कुरु
उत्कृष्ट भोग भूमि
सीतोदा नदी
सुमेरु पर्वत
सीता नदी
देव कुरु
उत्कृष्ट भोग भूमि
नि ष ध
तिगिञ्छ
प र्व त
मध्यमभोग भूमि
हरि
क्षेत्र
मध्यमभोग भूमि
हरि कान्ता नदी
हरित् नदी
मध्यमभोग भूमि
हरि
क्षेत्र
मध्यमभोग भूमि
महा हिमवन्
महा पद्म
प र्व त
जघन्य
हैमवत
क्षेत्र
भोग भूमि
रोहितास्या नदी
रोहित नदी
ज. भो. भू.
हैमवत
क्षेत्र
ज. भो. भू.
हिमवन्
पद्म हृद
प र्व त
म्लेच्छ खण्ड
म्लेच्छ खण्ड
म्लेच्छ खण्ड
सिंधु नदी
गंगा नदी
वि. प.
विजयार्ध पर्वत
वि. प.
भरत क्षेत्र आर्य खण्ड
www.JainKosh.org

भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्याम् ।।27।।

❖ भरत और ऐरावत क्षेत्र में उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी के छह समयों की अपेक्षा वृद्धि और ह्रास होता रहता है ।।27।।

उत्सर्पिणी (10 कोड़ा कोड़ी सागर)

+

अवसर्पिणी (10 कोड़ा कोड़ी सागर)

→

1 कल्पकाल (20 कोड़ा कोड़ी सागर)

1 सागर = 10 कोड़ा कोड़ी पल्य

www.JainKosh.org

अवसर्पिणी के 6 काल

सुषमा सुषमा	• उत्तम भोगभूमि
सुषमा	• मध्यम भोगभूमि
सुषमा दुषमा	• जघन्य भोगभूमि
दुषमा सुषमा	• कर्मभूमि • मोक्ष जा सकते हैं
दुषमा	• कर्मभूमि
दुषमा दुषमा	• कर्मभूमि

भोगभूमि

* जहा 10 प्रकार के कल्पवृक्षो से वस्तुए प्राप्त हो ।
* पति-पत्नी एक साथ उत्पन्न होते हैं ।
* पति का नाम आर्य और पत्नी का नाम आर्या होता है ।
* सभी भोगभूमि जीव मरकर नियम से स्वर्ग हो जाते हैं ।
* इनमें विकलत्रय जीव नहीं होते हैं ।
* इनको रोगादि, निहार भी नहीं होते हैं ।
* जीवन के अंत में पत्नी गर्भ धारण करती है ।
* अंत में पुरुष को छींक और स्त्री को जम्हाई आने पर मरण हो जाता है ।

कल्पवृक्ष

पानांग

- भोगभूमिजों को मधुर, सुस्वादु, छह रसों से युक्त, प्रशस्त, अतिशीत और तुष्टि एवं पुष्टि को करने वाले, ऐसे बत्तीस प्रकार के पेय द्रव्य को दिया करते हैं।

तूर्यांग

- उत्तम वीणा, पटु, पटह, मृदंग, झालर, शंख, दुंदुभि, भंभा, भेरी और काहल इत्यादि भिन्न-भिन्न प्रकार के वादित्रों को देते हैं।

भूषणांग

- भूषणांग जाति के कल्पवृक्ष कंकण, कटिसूत्र, हार, केयूर, मंजीर, कटक, कुण्डल, किरीट और मुकुट इत्यादि आभूषणों को प्रदान करते हैं।

कल्पवृक्ष

वस्त्रांग

- नित्य चीनपट एवं उत्तम क्षौमादि वस्त्र तथा अन्य मन और नयनों को आनन्दित करने वाले नाना प्रकार के वस्त्रादि देते हैं ।

भोजनांग

- सोलह प्रकार का आहार व सोलह प्रकार के व्यंजन, चौदह प्रकार के सूप (दाल आदि), एक सौ आठ प्रकार के खाद्य पदार्थ, स्वाद्य पदार्थों के तीन सौ तिरेसठ प्रकार और तिरेसठ प्रकार के रसभेदों को पृथक-पृथक दिया करते हैं।

आलयांग

- स्वस्तिक और नन्द्यावर्त इत्यादिक जो सोलह प्रकार के रमणीय दिव्य भवन होते हैं, उनको दिया करते हैं।

कल्पवृक्ष

दीपांग

- प्रासादों में शाखा, प्रवाल (नवजात पत्र), फल, फूल और अंकुरादि के द्वारा जलते हुए दीपकों के समान प्रकाश देते हैं।

भाजनांग

- भाजनांग जाति के कल्पवृक्ष सुवर्ण एवं बहुत से रत्नों से निर्मित धवल झारी, कलश, गागर, चामर और आसनादिक प्रदान करते हैं।

मालांग

- वल्ली, तरु, गुच्छ और लताओं से उत्पन्न हुए सोलह हजार भेद रूप पुष्पों की विविध मालाओं को देते हैं

तेजांग

- तेजांग जाति के कल्पवृक्ष मध्य दिन के करोड़ों सूर्यों की किरणों के समान होते हुए नक्षत्र, चन्द्र और सूर्यादिक की कान्ति का संहरण करते हैं।

www.JainKosh.org

1 पूर्व

- 1 पूर्वांग = 84,00,000 वर्ष
- 1 पूर्व = 84,00,000 पूर्वांग
- = 84,00,000 × 84,00,000 वर्ष
- = 70,56,000 करोड़ वर्ष

www.JainKosh.org

ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिताः ।।28।।

❖ भरत और ऐरावत क्षेत्र के सिवा शेष भूमिया अवस्थित हैं ।।28।।

कहा-कहा कौन-सा काल वर्तन करता है ?

देवकुरु-उत्तरकुरु	* पहला काल तुल्य — उत्तम भोग भूमि
हरिवर्ष-रम्यक क्षेत्रों में	* दूसरा काल — मध्यम भोग भूमि
हैमवत-हैरण्यवत क्षेत्रों में	* तीसरा काल — जघन्य भोग भूमि
विदेह	* चौथे काल की आदि
कुभोग भूमि-अंतर्द्वीपज्	* तीसरा काल तुल्य
मानुषोत्तर पर्वत के स्वयंप्रभ पर्वत तक असंख्यात द्वीप समुद्रों में	* तीसरा काल तुल्य
अंत का आधा स्वयंभूरमण द्वीप, स्वयंभूरमण समुद्र और 4 कोने	* पंचम काल तुल्य

कहा-कहा कौनसा काल वर्तन करता है ?

देवगति	* पहले काल तुल्य
नरकगति	* छठे काल तुल्य
भरत, ऐरावत क्षेत्र के 5 म्लेच्छ खण्ड और विद्याधर श्रेणियों में	* चौथे काल से आदि लगाकर उसी तक हानि वृद्धि

एकद्वित्रिपल्योपमस्थितयो हैमवतक-हारिवर्षक-दैवकुरवकाः ।।29।।

❖ हैमवत, हरिवर्ष और देवकुरु के मनुष्यों की स्थिति क्रम से एक, दो और तीन पल्योपम प्रमाण हैं ।।29।।

तथोत्तराः ।।30।।

❖ दक्षिण के समान उत्तर में (स्थिति) है ।।30।।

www.JainKosh.org

विदेहेषु संख्येयकालाः ।।31।।

❖ विदेहों में संख्यात वर्ष की आयु वाले मनुष्य हैं ।।31।।

द्विर्धातकीखण्डे ।।33।।

❖ धातकीखण्ड में क्षेत्र तथा पर्वत आदि जम्बूद्वीप से दूने-दूने हैं ।।

www.JainKosh.org

पुष्करार्द्धे च ।।34।।

- पुष्करार्द्ध में उतने ही क्षेत्र और पर्वत हैं ।।34।।

प्राङ्मानुषोत्तरान्मनुष्याः ।।35।।

- मानुषोत्तर पर्वत के पहले तक ही मनुष्य हैं ।।35।।

	जम्बूद्वीप	धातकीखण्ड	पुष्करार्द्ध	कुल
मेरु	1	2	2	5
भरत क्षेत्र	1	2	2	5
ऐरावत क्षेत्र	1	2	2	5
विदेह क्षेत्र	1	2	2	5
उत्तम भोग भूमि	2	4	4	10
मध्यम भोग भूमि	2	4	4	10
जघन्य भोग भूमि	2	4	4	10

आर्याम्लेच्छाश्च ।।36।।

- मनुष्य दो प्रकार के हैं — आर्य और म्लेच्छ ।।36।।

मनुष्य

आर्य

ऋद्धि प्राप्त

ऋद्धि अप्राप्त

म्लेच्छ

कर्म भूमिज

- म्लेच्छ खण्ड 850

अंतर्द्वीपज

- कुभोग भूमिज 96

www.JainKosh.org

आर्य

जिसमें धर्म की प्रवृत्ति हो ।

जिनके उच्च गोत्र का उदय है ।

गुण और गुणवानों से जो सेवित है ।

पुण्य क्षेत्र में जन्म लेने वाले आर्य कहलाते हैं ।

म्लेच्छ

जो धर्म क्रियाओं से रहित हैं ।

जिनके नीच गोत्र का उदय हो ।

जिनका आचार, खान-पान आदि असभ्य हो ।

पाप क्षेत्र में जन्म लेने वाले म्लेच्छ कहलाते हैं ।

अंतर्द्वीप कहा हैं ?

लवण समुद्र और कालोदधि समुद्र में 48-48 (कुल 196
अंतर्द्वीप हैं ।

इनमें दिशाओं में स्थित अंतर्द्वीप 100 यो. के, विदिशाओं के 25 यो. के और शिखरी आदि पर्वतों के पार्श्व भागों में स्थित 25 यो. के हैं ।

ये कुभोगभूमि भी कहलाती हैं ।

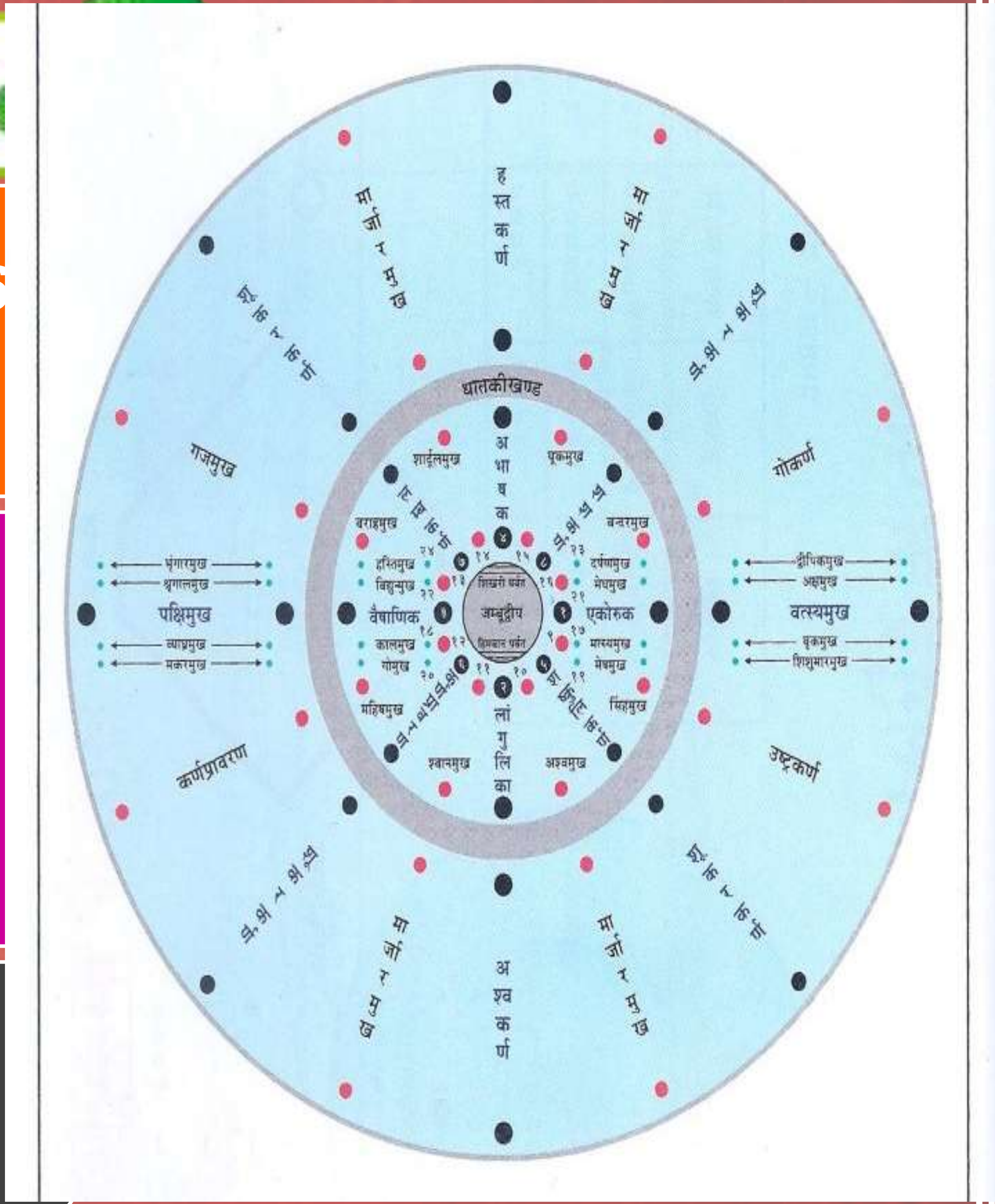

कुभोगभूमि मानुष कैसे ?

- गुफाओं व पेड़ों पर रहते हैं
- मिट्टी व फूलों का आहार करते है
- सबकी आयु 1 पल्य होती है
- मनुष्य नाम कर्म का ही उदय होता है परन्तु तिर्यंचों के अंग होते हैं जैसे घोडा, सिंह, बकरी, उल्लू, मगर आदि का मुख
- इसके अतिरिक्त एक जांघ वाले एक टांग वाले, पूंछ वाले सींग वाले मनुष्य भी होते हैं
- लम्बे कान वाले, मेघ, बिजली, दर्पण के समान मुख वाले भी होते हैं

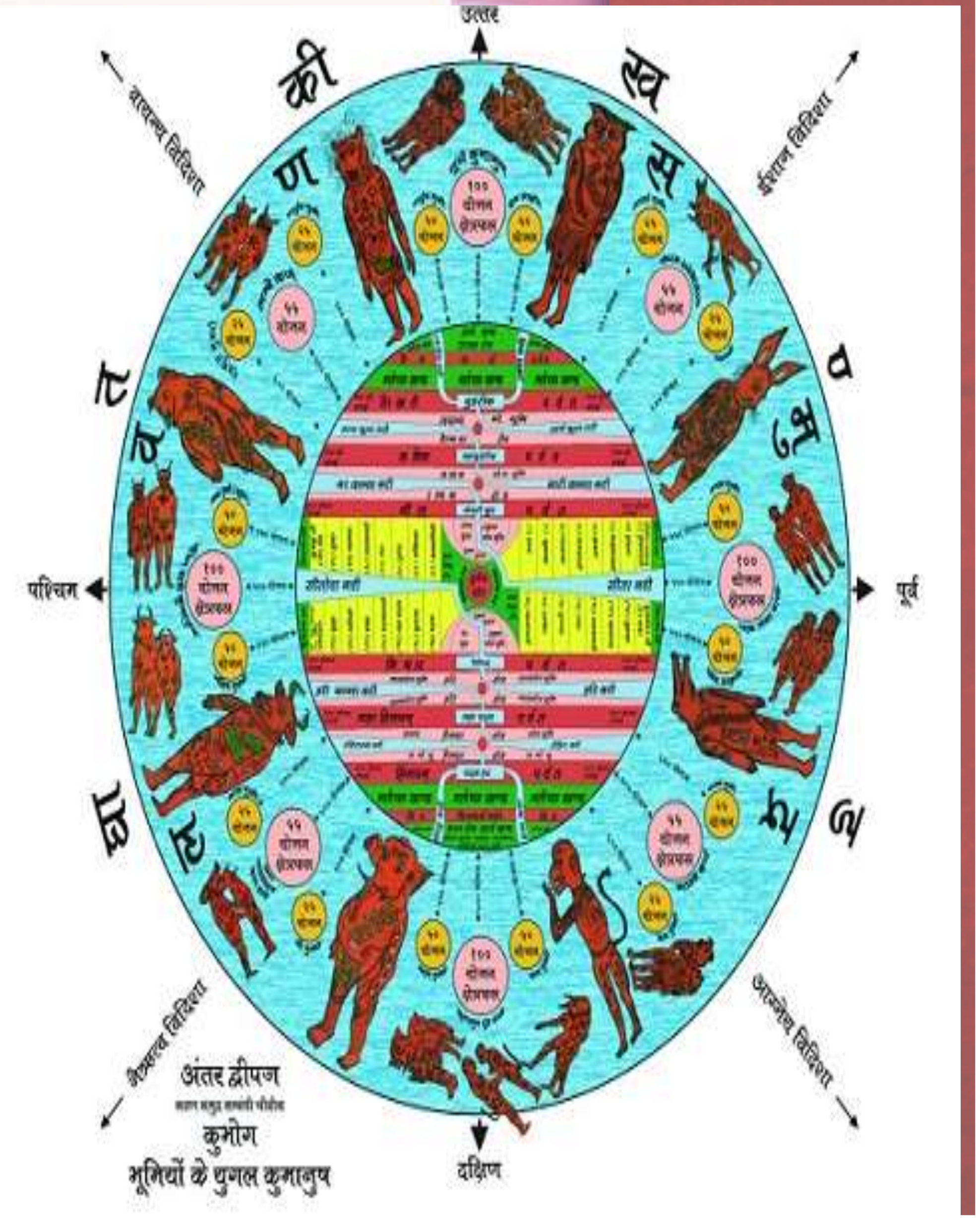

www.JainKosh.org

14 कुलकर

प्रतिश्रुति

- इन्होंने लोगो को समझाया के रोशनी प्रदान करने वाले वृक्षों का प्रकाश इतना अधिक था कि सूर्य और चंद्रमा दिखाई नहीं देते थे, लेकिन अब इन वृक्षों की आभा कम हो रही है। प्रतिश्रुति कुलकर के समय से दिन और रात का भेद माना जाता है।

सन्मति

- इनके समय में सितारे आकाश में दिखाई देने लगे थे।

क्षेमंकर

- इनके समय में जानवरों ने उपद्रव मचाना शुरू कर दिया था। अब तक कल्पवृक्षों ने पुरुषों और जानवरों की आपूर्ति के लिए पर्याप्त भोजन प्रदान किया था लेकिन अब स्थिति बदल रही थी और हर एक को खुद के लिए व्यवस्था करनी थी। घरेलू और जंगली जानवरों का अंतर क्षेमंकर कुलकर के समय से माना जाता है।

क्षेमंधर

- इन्होंने जंगली जानवरों को दूर भगाने के लिए लकड़ी और पत्थर के हथियारों का प्रयोग करना सिखाया।

सीमंकर

- इनके समय में कल्पवृक्षों को ले कर झगड़े शुरू हो गए थे। इन्हें सीमंकर इसलिए कहा जाता है क्यूँकि उन्होंने सीमाओं का स्वामित्व तय किया था।

सीमन्धर

- इनके समय में कल्पवृक्षों को लेकर झगड़ा अधिक तीव्र हो गया था। उन्होंने प्रति व्यक्ति पेड़ों के स्वामित्व की नींव रखी और निशान भी लगाए।

www.JainKosh.org

विमलवाहन

- इन्होंने घरेलू पशुओं की सेवाएँ कैसे ली जाए यह बताया। इन्होंने हाथी आदि सवारी योग्य पशुओं को कैसे नियंत्रण में कर उनकी सवारी की जाए, यह सिखाया।

चक्षुमान

- अब माता पिता अपने संतान का जन्म देख सकते थे।

यशस्वान्

- बालकों का नाम रखने तक जीने लगे ।

अभिचन्द्र

- अब लोग अपने बच्चों के साथ खेलने लगे थे। सर्वप्रथम अभिचन्द्र ने चाँदनी में अपने बच्चों के साथ खेल खेला था जिसके कारण उनका यह नाम पड़ा।

चन्द्राभ

- माता पिता बच्चों को आशीर्वाद दे कर बहुत प्रसन्न होते थे।

मरुद्धव

- मेघ ,वर्षा, बिजली, नदी आदि के दर्शन

प्रसेनजित

- इनके समय में बच्चे प्रसेन (भ्रूणावरण या झिल्ली जिसमें एक बच्चे का जन्म होता है) के साथ पैदा होने लगे थे।इनके समय से पहले बच्चे झिल्ली में नहीं लिपटे होते थे।

नाभिराय

- नाभिराय ने लोगों को नाभि काटना सिखाया

www.JainKosh.org

भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्रदेवकुरूत्तरकुरुभ्यः ।।37।।

❖ देवकुरु और उत्तरकुरु के सिवा भरत, ऐरावत और विदेह — ये सब कर्म भूमिया हैं ।।37।।

नृस्थिती परावरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते ।।38।।

❖ मनुष्यों की उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्योपम और जघन्य अन्तर्मुहूर्त है ।।38।।

www.JainKosh.org

तिर्यग्योनिजानाञ्च ।।39।।

❖ तिर्यंचों की स्थिति भी उतनी ही है ।।30।।

मनुष्य एवं तिर्यंचों की आयु

जघन्य	उत्कृष्ट
अंतर्मुहूर्त	3 पल्य

षट् कर्म

असि

मसि

कृषि

विद्या

वाणिज्य

शिल्प

www.JainKosh.org

तीन लोक के कुल अकृत्रिम चैत्यालय

अधोलोक	उर्ध्व लोक	मध्य लोक	कुल
7,72,00,000	84,97,023	458	8,56,97,481

www.JainKosh.org

मध्य लोक के 458 अकृत्रिम चैत्यालय

- ढाई द्वीप संबंधी — 398
- ढाई द्वीप के बाहर — 60

www.JainKosh.org

ढाई द्वीप संबंधी 398 कौन-से

पंच मेरू संबंधी	इष्वाकार पर्वत पर	मानुषोत्तर पर्वत पर
390	4	4

पंचमेरू संबंधी 390 किस प्रकार से होते हैं ?

एक मेरू संबंधी	• 78
पंचमेरू संबंधी	• 78×5 = 390

www.JainKosh.org

एक मेरू संबंधी 78 कौन-से ?

मेरु पर	• 16
कुलाचल	• 6
गजदंत	• 4
विजयार्द्ध	• 34
वक्षारगिरि	• 16
जम्बूवृक्ष	• 1
शाल्मली वृक्ष	• 1
कुल	• 78

www.JainKosh.org

ढाई द्वीप के बहार के 60 कौन-से ?

नन्दीश्वर द्वीप के	कुण्डलवर 11वें द्वीप पर	रुचिकवर 13वें द्वीप पर
52	4	4

www.JainKosh.org

नंदीश्वर द्वीप का व्यास

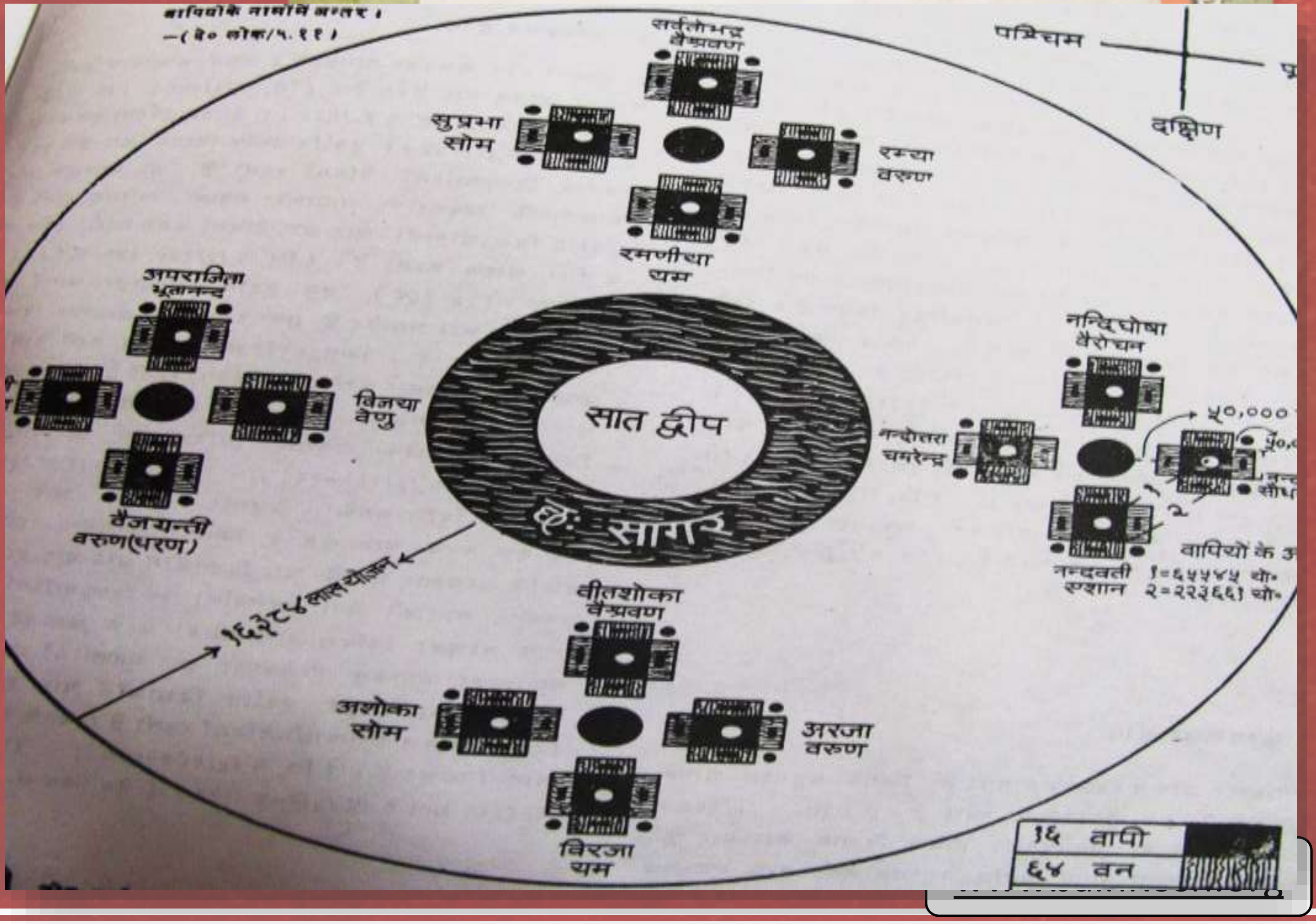

1 द्वीप	1,00,000
1 समुद्र	2,00,000
2 द्वीप	4,00,000
2 समुद्र	8,00,000
3 द्वीप	16,00,000
3 समुद्र	32,00,000
4 द्वीप	64,00,000
4 समुद्र	1,28,00,000
5 द्वीप	2,56,00,000
5 समुद्र	5,12,00,000
6 द्वीप	10,24,00,000
6 समुद्र	20,48,00,000
7 द्वीप	40,96,00,000
7 समुद्र	81,92,00,000
8 द्वीप	1,63,83,00,000

नंदीश्वर द्वीप की एक दिशा संबंधी 13 चैत्यालय

अंजनगिरी	• 1
दधिमुख	• 4
रतिकर	• 8
कुल	• 13

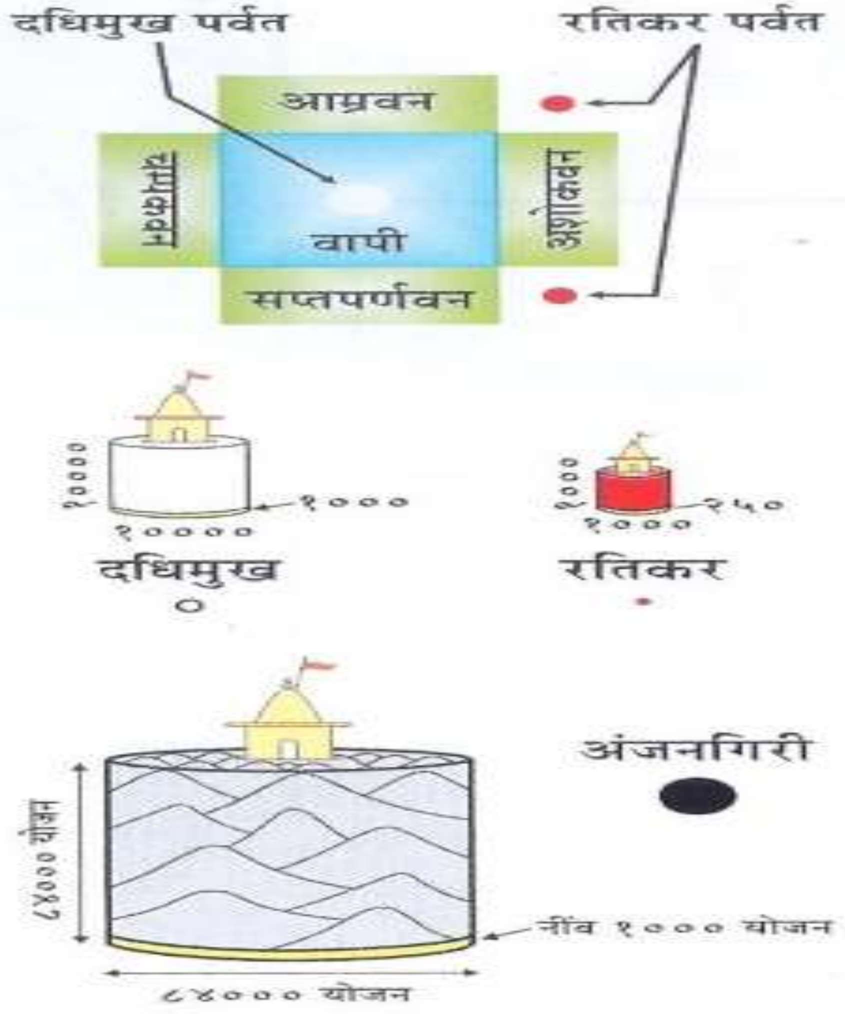

www.JainKosh.or

नंदीश्वर द्वीप के चारों दिशा के 52 चैत्यालय

अंजनगिरी × 4 = 4

दधिमुख × 4 = 16

रतिकर × 4 = 32

कुल × 4 = 52

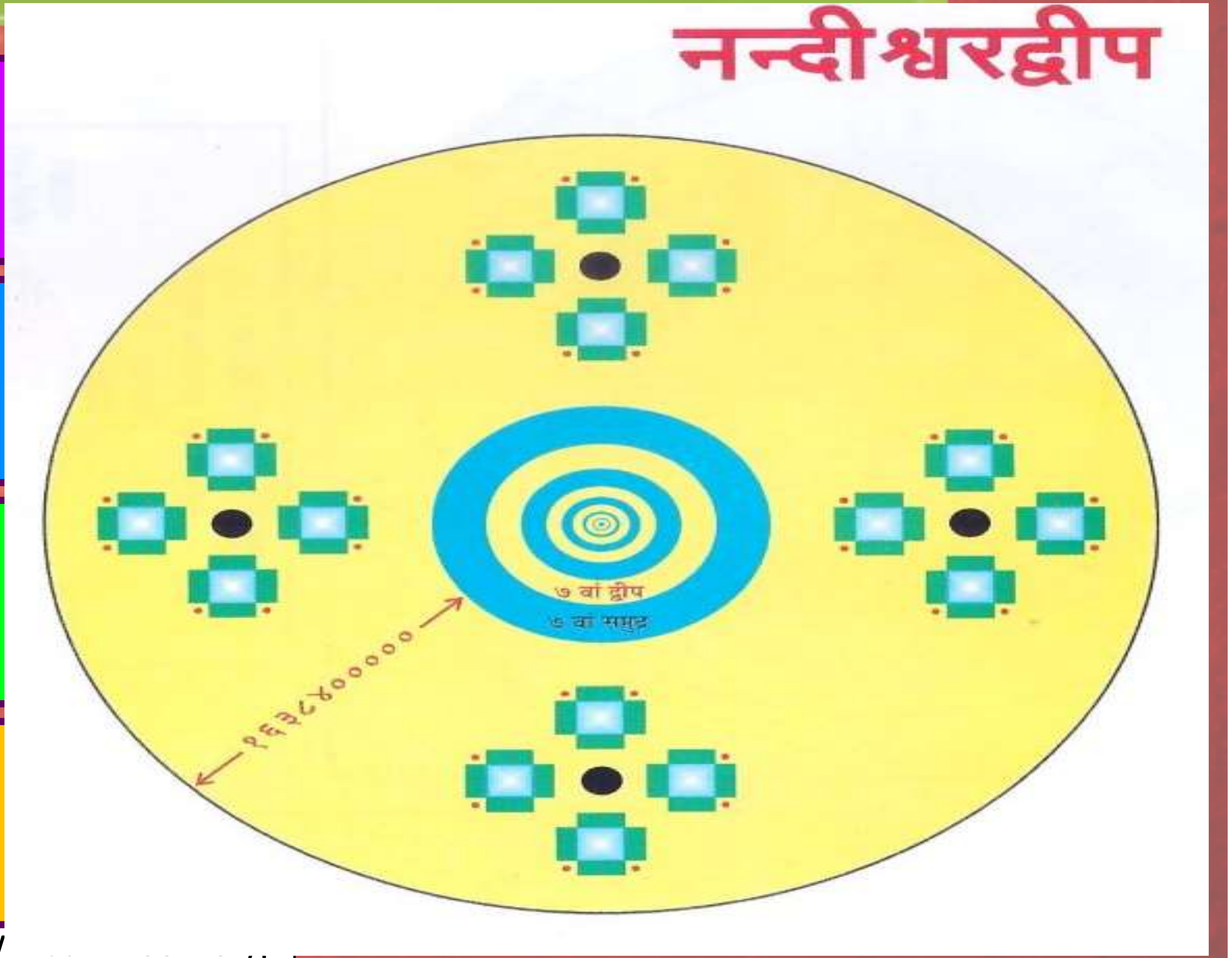

पर्वतों की ऊचाई

अंजनगिरी	84000
दधिमुख	10000
रतिकर	1000

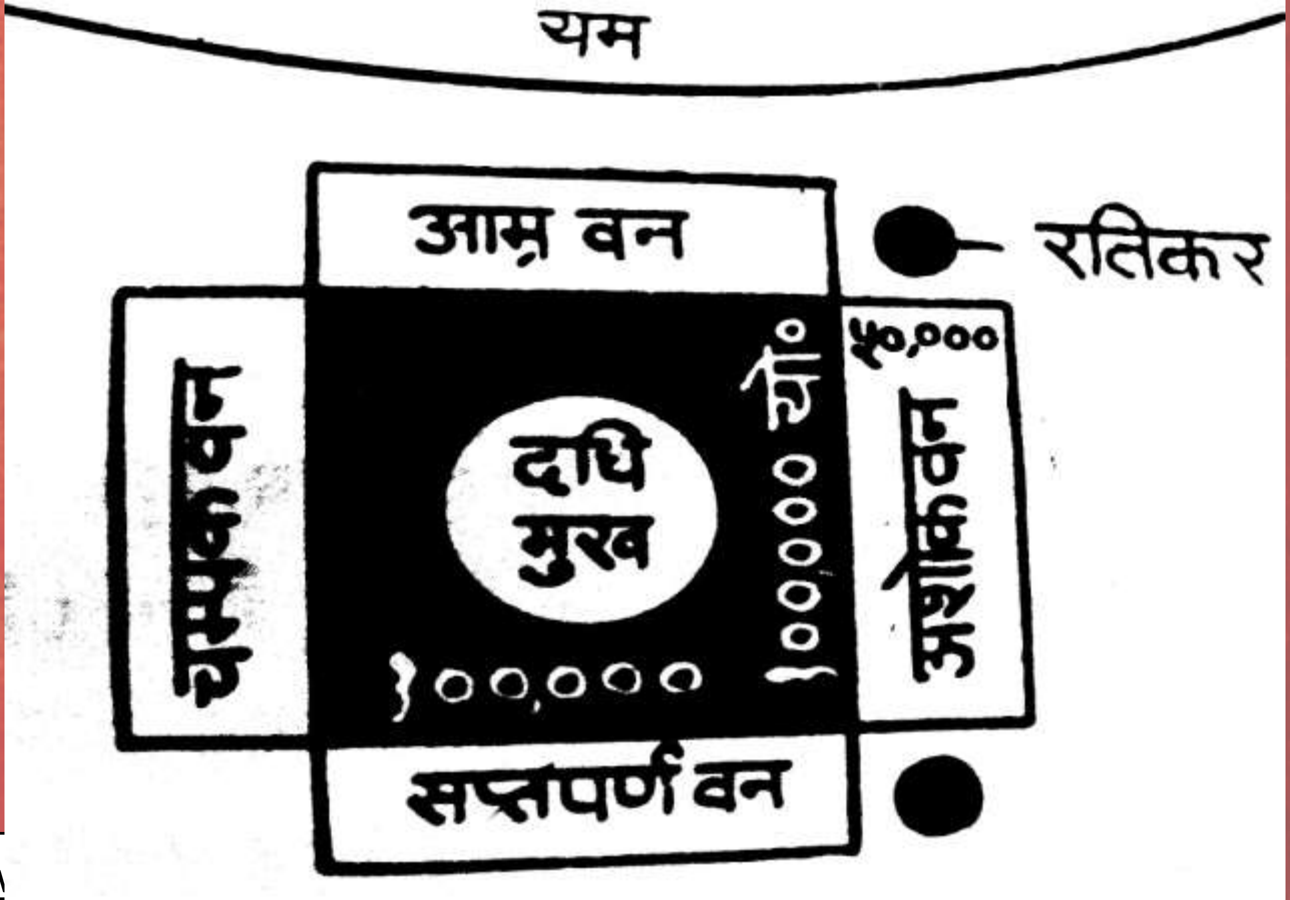

मध्यलोक के 458 अकृत्रिम चैत्यालय

पंच मेरू संबंधी	390
इष्वाकार पर्वत पर	4
मानुषोत्तर पर्वत पर	4
नन्दीश्वर द्वीप के	52
कुण्डलवर 11वें द्वीप पर	4
रुचिकवर 13वें द्वीप पर	4
कुल	458

www.JainKosh.org

चैत्यालय के तीन प्रकार

	उत्कृष्ट	मध्यम	जघन्य
लम्बाई	100 यो.	50	25
चौड़ाई	50	25	12.5
ऊचाई	75	37.5	18.75

कहा कौन-से चैत्यालय हैं ?

उत्कृष्ट	भद्रशाल वन, नन्दन वन, नन्दीश्वर, वैमानिक — उर्ध्व लोक
मध्यम	सोमनस वन, कुलाचल पर्वत, वक्षारगिरि, इष्वाकार, मानुषोत्तर, कुण्डलगिरि, रुचिकगिरि
जघन्य	पाण्डुक वन
और छोटे (1 कोस)	विजयार्द्ध, जम्बू वृक्ष, शाल्मली वृक्ष
भिन्न-भिन्न प्रकार (जैसा सर्वज्ञ ने देखा)	अधो लोक, व्यंतर, ज्योतिषी

- Reference : श्री गोम्मटसार जीवकाण्डजी, श्री जैनेन्द्रसिद्धान्त कोष, तत्त्वार्थसूत्रजी

- Presentation created by : Smt. Sarika Vikas Chhabra
- For updates / comments / feedback / suggestions, please contact

  - sarikam.j@gmail.com
  - ☎: :9406682880
  - www.Jainkosh.org